पपीहा, बादल, बिजली, दादुर आदि उपादान विरहिणी की विरह पीड़ा को बढ़ाने वाले हैं। याचक को अपने पति के लिए संदेश देती हुई मारवणी कहती है.

पावस मास विदेस पिय धरि तरुनि कुल सुश्य।
सारंग सिखर निषद्ध करि मरईस कोमल मुहय।।

वर्षा ऋतु में इंद्रधनुष की शोभा भी देखते ही बनती है। कृषक अपने कृषि कार्य में जुट जाते हैं। सभी पेड़-पौधे नई हरी पत्तियों से सज जाते हैं। उद्यान और मैदान हरी घास की मखमली चादर ओढ़ लेते हैं। जल के सभी प्राकृतिक स्त्रोत जल से आपूरित हो जाते हैं। यह ऋतु हमें जीवन का सौंदर्य और कर्म का प्रेरण भी प्रदान करती है। वर्षा जहां एक ओर अपनी टप-टप की ध्वनि से बरस कर नदी व तड़ागों को कलकल का स्वर प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर जीवन को भी संगीत रस से सराबोर करती है।

भारतीय संगीत की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इसका हर सुर, राग और भाव हर पल घड़ी दिन ओर मौसम के हिसाब से रचे गए हैं। और किस समय किस राग को गाया जाना चाहिए इसकी जानकारी संगीतज्ञों को बेहतर होती है। राग मेघ मल्हार मेघों का आह्वान करने, मेघाच्छन्न आकाश का चित्रण करने और वर्षा ऋतु के आगमन की आहट देने में सक्षम राग माना जाता है। राग मियां मल्हार की सशक्त स्वरात्मक शक्ति बादलों के परमाणुओं को झकझोरने की सामर्थ्य रखता है। तानसेन मल्हार राग गाने के लिए मशहूर थे। माना जाता है कि तानसेन के मियां मल्हार राग में गाने से सूखाग्रस्त प्रदेशों में भी बारिश हो जाती थी- कारे कारे बदरा, घटा घनघोर

उमड़ घुमड़ कर बरसन को आयो मेघा....

उक्त संगीत मल्हार राग से सम्बंधित हैं। मल्हार में वर्षा के प्राकृतिक सौंदर्य को स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की अनूठी क्षमता होती है। राग और संगीत की दुनिया बारिश के जिक्र के बिना अधूरी सी प्रतीत होती है तभी तो गीत, संगीत राग और विराग हर जगह बारिश की छुअन महसूस की जा सकती है। संतोष आनंद के बोल में यह सुगमता से अनुभूत है- 'मेघा रे मेघा रे, मत परदेस जा, बरसने लगी है बूंदें तरसने लगा है मन, जरा कहीं बिजली चमकी, लरजने लगा है मन, और न तू मुझको डरा ओ काले काले घन... ।